(1) सतगुरू की महिमा अनँत , अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उगाडिया, अनँत दिखावणहार।।

कठिन शब्दार्थ अनँत– असीम, उपगार– उपकार, लोचन–नेत्र, उगाडिया– खोंल दिए, दिखावणहार– दिखाने या साक्षात्कार कराने वाला।

प्रसंग– यह साखी सन्त कवि कबीर द्वारा रचित गुरू महिमा शीर्षक से ली गई है। इसमें कबीर ने गुरू की महिमा का बखान किया है।

व्याख्या–कबीरदास कहते है की सच्चे गुरू की महिमा का क्या उल्लेख किया जाए। उनकी महिमा अपार है । वे अपने शिष्यों पर अगणित उपकार करते है । और वह रात दिन शिष्यों पर अहैतुकी कृपा करते रहते है। गुरू की महान कृपा तो इस बात में है कि वे ज्ञान–नेत्रों का अन्नत दिशाओं में खोल देते है। जिससे शिष्य को अनंत ज्ञान प्रकाश दिखाई देने लगता है। तत्वज्ञ शिष्य को फिर रोम रोम से (अनन्त नेत्रों से) परम तत्व (ब्रहा) का साक्षात्कार होने लगता है। गुरू द्वारा प्रदत्त ज्ञान ही वास्तव में आंखे खोल देने वाला होता है।

1. विशेष– उपनिषदों में ज्ञान का कारण, ज्ञेय तथा ज्ञान की अवधि की अनन्तता का उल्लेख मिलता है। कबीर ने उसी तत्व ज्ञान का वर्णन किया है।
2. गुरू को ज्ञान चक्षु खोलने वाला बताया गया है।

(2) सतगुर साँचा सूरिवाँ, सबद जु बाह्या एक ।
लागत ही भैं मिलि गया,पड्या कलेजै छेक।।

कठिन शब्दार्थ– साँचा– सच्चा, वास्तविक । सूरिवाँ–शूरवीर।बाह्य–बेधन किया। पड्या–पड गया। छेक– दूरी,छेद। भैं –भूमि।

प्रसंग– यह साखी सन्त कवि कबीर द्वारा रचित गुरू महिमा शीर्षक से ली गई है। इसमें सत्य गुरू के ज्ञानोपदेश का प्रभाव बताया गया है।

व्याख्या–कबीरदास कहते है की सद्गुरू सच्चा शूरवीर है , जिस प्रकार सच्चा शूरवीर एक ही बाण में काम तमाम कर देता है ,उसी प्रकार गुरू के एक शब्द–ज्ञान रूपी तीर से शिष्य भूमि में मिल गया ,अर्थात उसके भीतर का अहम् समाप्त हो गया । गुरू के एक शब्द का इतना व्यापक प्रभाव है कि साधक के हदय में इस शब्द रूपी बाण के लगते ही अहंकार तो विलिन हो जाता है। और चित पर वह शब्द रूपी बाण अपना व्यापक प्रभाव छोडता है। जिससे वह विषय वासना से दूर हो जाता है।

3. विशेष– गुरू के बाण के प्रहार से हदय में ज्ञान विरह का भाव जाग जाता है।
4. मैं मिलि गया– अर्थात अहंभाव विलिन हो गया, ईश्वर से एकाकार हो गया ।

महेश कुमार बैरवा (व्याख्याता)

(3) चौसठि दीवा जोइ करि, चौदह चंदा मांहि।
तिंहिं घरि किसकों चानिणौं , जिह्वि घरि गोविन्द नांहि।।

कठिन शब्दार्थ– दीवा –दीपक , ज्ञानालोक। जोइ करि– प्रकाशित कर । चानिणौं– उजाला। तिहिं– उस, वहां ।

प्रसंग– यह साखी सन्त कवि कबीर द्वारा रचित गुरू महिमा शीर्षक से ली गई है। इसमें गुरू द्वारा दिए गए ज्ञान का महत्व बताया गया है।

व्याख्या–कबीरदास कहते है कि चौदह विद्याओं की चौंसठ कलाओं के ज्ञान रूपी आलोक होने पर भी उसके अन्तःकरण (हृदय रूपी घर) में किसका प्रकाश है, जिसमें गोविन्द का निवास नहीं है। अर्थात् जिसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश एवं भक्ति नहीं है। उसमें ईश्वर भी नहीं है।

5. विशेष– विद्याऐं चौदह है तथा कलाएं चौसठ मानी गई है। इन सभी विद्याओं और कलाओं में भगवान् का प्रकाश विद्यमान है।
6. ज्ञान और भक्ति के समन्वय से ईश्वरीय अनुभूति होती है।

(4) थापणि पाई थिति भई, सतगुरू दीन्हीं धीर।
कबीर हीरा बणजिया, मानसरोवर तीर।।

कठिन शब्दार्थ– थापणि– स्थापना, प्रतिष्ठा । थिति– स्थायित्व, स्थिति। धीर– सुदृढ। बणजिया– व्यापार करने लगा।

प्रसंग– यह साखी सन्त कवि कबीर द्वारा रचित गुरू महिमा शीर्षक से ली गई है। इसमें गुरू की महिमा बताते हुए कबीर कहते है कि गुरू ने माया और संशय के प्रभाव को विफल कर दिया है।

व्याख्या–कबीरदास कहते है गुरू के स्वरूप –प्रतिष्ठा का उपदेश सुनने से साधक (मैं) अपने स्वरूप में स्थित हो गया। सद्‌गुरू ने धैर्य बंधाया तो निष्ठा और अधिक परिपक्व हो गयी । अब कबीर दास मानसरोवर के तट पर हीरे का व्यापार करने लगा है। आशय यह है कि हीरा परमानन्द का या परम ब्रह्म का ही प्रतीक है। मानसरोवर ब्रहाण्ड का प्रतीक है। हद्य में ज्ञान की स्थापना होने से कबीर ब्रहानंद में लीन होकर प्रसन्नता की मुद्रा में अपने अन्तःकरण में आनन्द ले रहा है।

7. विशेष– मानसरोवर शुद्व चैतन्य स्वरूप अंतःकरणकी वृत्ति है। उसके तट पर जीव आनन्द में हिलोरें ले रहा है। यह हीरे का व्यापार है।
8. यहां हीरा परमानंद के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।
9. हीरा का व्यापार करना तथा हीरा खरीदना सिद्व समाज में परम तत्व की उपलब्धि का प्रतीक है।

महेश कुमार बैरवा (व्याख्याता)

(5) पासा पकडा प्रेम का ,सारी किया सरीर।
सतगुरू दाव बताइया, खेले दास कबीर। ।

कठिन शब्दार्थ– पासा–खेल क पांसे। सारी–गोटी।

प्रसंग– यह साखी सन्त कवि कबीर द्वारा रचित गुरू महिमा शीर्षक से ली गई है। इसमें सदगुरू के निर्देशानुसार भक्ति करने का वर्णन कियागया है।

व्याख्या–कबीरदास कहते है कि मैनें प्रेम के पाँसे बना लिये हैं और इस शरीर की गोटी बना ली है। मुझे मेरे सद्गुरू इस खेल की चाल(दाव) बता रहे है और मैं भक्ति का खेल खेल रहा हूं। अर्थात् परमात्मा की भक्ति में जीवन रूपी खेल को खेल रहा हूँ।

10. विशेष– चौपड के खेल में पासे फेंक कर दाव दिया जाता है उसी केअनुसार गोटीयों की चाल बढती है। यहां कबीर ने जीवन को चौपड का खेल बताया है।

(6)माया दीपक नर पंतग , भ्रमि भ्रमि इवै पंडत।
कहै कबीर गुर ग्यान थैं एक आध उबरंत।।

कठीन शब्दार्थ–नर –मनुष्य, जीव। पतंग–पतंगा। भ्रमि भ्रमि– चक्कर काट कर ,भ्रम में लपट कर। उबरंत – उबर जाते है। माया–संसार।

प्रसंग– इसमें गुरू को सांसारिक माया–मोह से मुक्ति दिलाने वाला बताया गया है।

व्याख्या– कबीरदास कहते है कि माया रूपी दीपक के लिए नर(जीव) पतंगा रूप हैं । मानव (जीव) घुम–घुम कर अनेक यौनियों में भटकता हुआ अर्थात अज्ञान में भूला हुआ इसी आग में ऐसे ही जलता है। केवल गुरू के द्वारा प्रदत्त ज्ञान से कोई एक आध ही इस आग से बच पाता है।

विशेष– गुरू के ज्ञान से भ्रम, अज्ञान दूर हो जाता है फिर जीव का भटकना बंद हो जाता है। और माया से मुक्ति मिल जाती है।

(7) कोटि कर्म पल मैं करै, यहु मन विषिया स्वादि।
सतगुरू सबद न मानई, जनम गवायो बादि। ।

कोटि–करोड। विषया– विषय–भोग। सबद– शब्द, बताया गया ज्ञान। बादि–व्यर्थ

इसमें गुरू से ज्ञान न मिलने से जीवन जनम को व्यर्थ गंवाने का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– कबीरदास कहते है कि यह मन विषय–वासना का स्वाद चख लेने से भ्रमित हो जाता है और पल भर में अनेक ऐसे काम कर लेता है । उस दशा में यह गुरू के शब्दों को नहीं मानता है अर्थात् उनके ज्ञानोपदेश नहीं सुनता है और अपना जन्म या जीवन व्यर्थ ही गवां देता है।

विशेष– मनुष्य योनि में ही ईश्वर की सच्ची भक्ति और परमात्मा का ज्ञान हो सकता है जीवन को सफल बनाने के लिए ज्ञान चेतना जरूरी है।

महेश कुमार बैरवा (व्याख्याता)

(8) गुरू गुरू में भेद है , गुरू गुरू में भाव।
सोई गुरू नित बन्दिये, जो शब्द बतावे दाव।।

गुरू–गुरू, ज्ञानी ,भारी। नित–हमेशा। बन्दिये– बन्दना।
व्याख्या– कबीरदास कहते है कि सामान्य गुरू एवं ज्ञानी गुरू में अन्तर है। ज्ञानी गुरू में ज्ञान–साधना एवं परम तत्व की साधना का भाव अधिक रहता है। इसलिए जो गुरू सांसारिक जीवन में परमात्मा प्राप्ति का दांव बताये, जीवन रूपी खेल की बाजी का ज्ञान दे, उसी गुरू की वन्दना करनी चाहिए।
विशेष– जीवन को चौसर का खेल बताकर सद्गुरू का दांव बताने वाला अर्थात सच्चा ज्ञानदाता बताया गया है।

(9) गुरू बिन माला फेरते, गुरू बिन देते दान।
गुरू बिन सब निष्फल गया, जा पूछो वेद पुरान।।

प्रसंग–इसमें गुरू–कृपा के बिना जीवन को निष्फल बताया गया है।
व्याख्या– कबीरदास कहते है कि जो लोग गुरू से ज्ञान प्राप्त किये बिना माला जपते है , और गुरू के निर्देश के बिना दान देते है । उनका सब कुछ निष्फल चले जाता है। यह बात वेद पुरानों में भी कही गयी है।

(10) कोटिन चन्दा ऊगवें, सूरज कोटि हजार।
सतगुरू मिलिया बाहरा, दीसे घोर अँधार।।

कोटिन–करोडों। ऊगवें– उदित होवें। बाहरा–अभाव। दिसे–दिखाई दे ।अंधार–अधेरा।
प्रसंग–इसमें गुरू से ज्ञान नहीं मिलने से संसार अंधकारमय लगने का वर्णन है।
व्याख्या– कबीर कहते है कि चाहे करोडों चन्द्रमा उदित हो जावे और करोडों सूर्य प्रकाशित होवें, परन्तु जब तक सद्गुरू नहीं मिल पाता है , तब तक सब और घोर अंधकार दिखाई देता है। अर्थात् सदगुरू द्वारा ज्ञान चक्षु खोले जाते हैं, ज्ञान चक्षु के बिना सर्वत्र अंधेरा दिखाई देता है।
विशेष– गुरू द्वारा दिये गये ज्ञान को करोडों सूर्यों से भी प्रखर बतायागया है।

(11)ऐसे तो सतगुरू मिले, जिनसे रहिये लाग।
सबही जग शीतल भया, जब मिटी आपनी लाग।।

लाग– अपनत्व। आग –सन्ताप, सांसारिक कष्ट।
प्रसंग– इसमें गुरू को सांसारिक तापों को मिटाने वाला बताया गया है।
व्याख्या– कबीरदास कहते है कि उन्हें ऐसे सद्गुरू मिले, जिनसे उनका अपनत्व या पूरी तरह लगाव बना रहा।इससे सांसारिक ताप अर्थात दैहिक, दैविक ,व भौतिक सन्ताप मिलने से अपने लिए सारा संसार शीतल अर्थात् सुखद बन गया।
विशेष– गुरू कृपा से सांसारिक दाहों से मुक्त होने का वर्णन आस्थापूर्ण किया गया है। आग का प्रयोग प्रतीकात्मक हुआ है।

महेश कुमार बैरवा (व्याख्याता)

(12)यह तन विष की बेलरी, गुरू अमृत की खान।
सीस दिये जो गुरू मिलें ,तो भी सस्ता जान।।

इसमें गुरू को अमृत की खान बताकर ज्ञान प्राप्ति का सन्देश दिया गया है।

व्याख्या–कबीरदास कहते हैं कि यह शरीर माया मोह से ग्रस्त रहने से विष की बेल जैसा है और गुरू अमृत की खान के समान कल्याणकारी है। इसलिए सर्वस्व अपर्ण करकेभी यदि ऐसे सद्गुरू मिल जावें , तो भी इसे सस्ता सौदा समझना चाहिए।

विशेष– सीस दिये का आशय सर्वस्व अर्पण करना है, यह एक मुहावरा जैसा है।

विषय भोगों से मुक्ति एवं ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरू की कृपा परमावश्यक बताई गई है।

(13) गुरू से ज्ञान जो लीजिए, सीस दीजिए दान।
बहुतक भोंदू बह गये,राख जीव अभिमान।।

बहुतक –बहुत सारे। भोंदू–मूर्ख। अभिमान– घमण्ड।

इसमें हर दशा में गुरू से ज्ञान प्राप्त करने के लिए कहा गया है।

व्याख्या– कबीरदास कहते हैं कि अपना सिर देकर भी, अर्थात् सर्वस्व अपर्ण करके भी गुरू से ज्ञान प्राप्त कर लो। गुरू से ज्ञान प्राप्त करने से बहुत सारे मूर्ख तर गये और जीव की चैतन्यता की रक्षा कर सके।

विशेष– चैतन्य दशा में ही ज्ञान से ज्ञेय की साधना हो सकती है।

(14) गुरू समान दाता नहीं ,जाचक शिष्य समान।
चार लोक की संपदा, सो गुरू दीन्हीं दान।।

दाता– देने वाला। जाचक– याचक, परखने वाला। सम्पदा– धन–वैभव।

प्रसंग– इसमें गुरू की उदारता एवं कृपा का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– कबीर कहते है कि गुरू के समान कोई दाता नहीं है तथा शिष्य के समान कोई याचक नहीं है। शिष्य को योग्य समझकर गुरू ने उसे चारों लोकों की सम्पदा उदारता से दे दी है। अर्थात् योग्य शिष्य को गुरू सब कुछ दे देता है।

विशेष– शिष्य योग्य हो, तो गुरू उसे सभी लोगों का सुख वैभव दे, सकता है।उसे परम पद की प्राप्ति का मार्ग बता सकता है।

कबीर ने तीन की जगह चार लोक बताये है।

(15) सतनाम के पटतरे, देवे को कछु नाहिं।
क्या ले गुरू संतोषिये, हौस रही मन माहिं।।

पटतरे– समतुल्य। देवे को – देने के लिए। हौंस – उल्लास, इच्छा।

प्रसंग– इसमें गुरू की महिमा का बखान करते हुए कबीर कहते हैं कि –

व्याख्या– शिष्य को गुरू के द्वारा सत्य नाम या परम तत्व रूपी बहुमूल्य वस्तु दी गई है। इससे शिष्य गुरू के प्रति बहुत ही कृतज्ञता अनुभव करता है। वह इसके बदले कोई समतुल्य वस्तु भेंट करना चाहता है।परन्तु उसके मन में यह संकोच रहता है कि गुरू ने तो सत्यनाम या राम नाम का ऐसा मंत्र दिया है कि जिससे मोक्ष तक प्राप्त हो सकता है, किन्तू मैं जो भी वस्तु गुरू दक्षिणा के रूप में दूंगा, वह उसकी तुलना में नगण्य ही रहेगा। वैसे भी गुरू तो सन्तोषी स्वभाव के हैं, फिर इस मंत्र के बदले क्या दिया जाए? शिष्य के मन में यह प्रबल इच्छा बनी रहती है और इससे वह व्यथित हो जाता है।

विशेष– गुरू द्वारा दिया गया सत्य नाम (राम नाम) का ज्ञान मंत्र इतना महान् है कि उसके समतुल्य संसार की कोई भी वस्तु नहीं है। अतएव बदले में क्या दिया जाए, यह चिन्तनीय है।

गुरू की उदारता एवं महिमा का उल्लेख कर शिष्य द्वारा कृतज्ञता व्यक्त की गई है।

महेश कुमार बैरवा (व्याख्याता)

दोहे

(1) मन मथुरा दिल द्वारिका, काया कासी जांणि।
दसवाँ द्वारा देहुरा तामैं जोति पिछांणि।।

काया– शरीर। देहुरा–देवालय, देवताओं का घर। दसवाँ द्वारा – दसों द्वारा वाला। पिछांणि–पहचाना।

प्रसंग– प्रस्तुत दोहा(साखी) कबीर द्वारा रचित है। इसमें देवी–देवताओं के दर्शनों के लिए मन्दिर में जाना व्यर्थ बताया गया है।

व्याख्या– कबीर कहते है कि प्रत्येक व्यक्ति का मन मथुरा, ,हृदय द्वारिका और शरीर काशी है। दस द्वारों वाला देवालय रूपी शरीर मनुष्य के पास रहता हैं। इसके अन्दर जो परमात्मा की ज्योति (आत्म तत्त्व) है, उसे पहचानना चाहिए और उसी परमात्मा स्वरूप ज्योति की उपासना करनी चाहिए। अतः भगवान् के दर्शनों के लिए तीर्थों एवं देवालयों में भटकना व्यर्थ है।

विशेष– (1) शरीर को ही मथुरा, द्वारिका तथा काशी के रूप में श्रेष्ठ देवालय एवं पवित्र तीर्थ बताया गया है।

(2) जोति पिछांणि का आशय है कि आत्म ज्योति को पहचानो, इसी में परमात्मा भी निवास करता है।

(3) दसवाँ द्वारा का आशय शरीर में दस द्वार हैं–दो कर्ण छिद्र, दो नासा छिद्र, दो नेत्र, एक मुख , एक मलद्वार, एक मूत्रद्वार तथा दसवाँ ब्रह –रन्ध्र (कपाल में एक विवर जिसमें प्राणान्त में जीव शरीर को छोडकर निकल जाता है)।यह शरीर दस द्वारों वाला देवालय है।

(2)

जब मैं था तब हरि नहिं अब हरि है मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया जब दीप देख्या माँहि।।

मैं –अहंकार। हरि–ईश्वर। अँधियारा–अंधकार, अज्ञान। माँहि– भीतर में।

प्रसंग– यह दोहा कबीर द्वारा रचित साँखियों से उद्वत है। इसमें बताया गया है कि अंहकार के कारण ईश्वर की प्राप्ति सम्भव नहीं है।

व्याख्या– कबीर स्पष्ट कहते हैं कि जब तक व्यक्ति के मन में अंहकार रहता है और अहंकारवश अपने आप को ही सब कुछ समझता हुआ आचरण करता है, तब ईश्वर की प्राप्ति सम्भव नहीं है। इसके विपरीत जब ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है, तब जीव का अहंकार स्वयं ही मिट जाता है। यह स्थिति ठीक उसी प्रकार है, जिस प्रकार दीपक के प्रकाशित होते ही घर के भीतर का सब अंधकार मिट जाता है।

आशय यह है कि संसार अज्ञान–अंधकार का घर है । जब शरीर के भीतर अन्तःकरण में ज्ञान का प्रकाश अर्थात् परमात्मा रूपी दीपक का प्रकाश जाग्रत हो जाता है , तब उस दिव्य प्रकाश से आत्मा प्रकाशित या ज्ञानालोक से भासित हो जाती है। अन्तःकरण का अंधकार अज्ञान मिट जाता है और आत्मा में परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है।

विशेष– (1) अहंकार को त्यागने से आत्मज्ञान का आलोक होता है। संसार में अज्ञान रूपी अधंकार व्याप्त है। जीव भी अहंकार अज्ञान से ग्रस्त रहता है। तब वह स्वयं को कर्त्ता, भोक्ता आदि सब कुछ मानता है। परमात्मा के प्रकाश से अज्ञान दूर होता है।

(2) दीपक आंतरिक दिव्य प्रकाश के लिए प्रयुक्त हुआ है।

(3)

सातों सबद जु बाजते, घरि घरि होते राग।
ते मन्दिर खाली पडे, बेसण लागे काग।।

सातों सबद– सप्त स्वर। राग –प्रेमपूर्ण गायन आदि। मन्दिर –घर या मकान। बेसण–बैठने।

प्रसंग– यह दोहा कबीर द्वारा रचित साखियों से उद्वत है । इसमें सांसारिक सुख–वैभव को नश्वर बताया गया है।

व्याख्या– कबीरदास कहते है कि जिन भवनों एवं महलों में निरन्तर सप्त स्वर में बाजे बजते रहते थे और तरह तरह के राग हर समय गाये जाते थे, वे भवन एवं महल अब खाली पडे हैं और अब वहाँ पर कौए बैठे हुए दिखाई देते है। आशय यह कि समय सदा एक सा नहीं रहता है। इसलिए प्रभु भक्ति में निमग्न रहकर जीवन संवारना चाहिए, नश्वर संसार से मुक्ति का प्रयास करना चाहिए।

विशेष– संसार के भोग विलास आदि सब कुछ नश्वर या क्षण भंगुर हैं, केवल परमात्मा ही शाश्वत सत्य है। अतः उसी में आसक्ति रखनी चाहिए।

(2) ईश्वर भक्ति एवं परमात्मा प्रेम का संदेश व्यंजित हुआ है।

(4) आषडियाँ झांई पडी पंथ निहारि निहारि।
जीभडियां छाला पड्या राम पुकारि पुकारि।।

आषडियां–आँखों में। झांई– धुँधलापन, अँधेरापन। निहारि–देखकर। जीभडियाँ–जीभ पर।

प्रसंग– प्रस्तुत साखी कबीर द्वारा रचित भक्ति भाव से सम्बन्धित है। इसमें प्रियतम परमात्मा की विरह–दशा का चित्रण किया गया है।

व्याख्या– कबीर दास कहते है कि अपने प्रियतम परमात्मा की प्रतीक्षा करते–करते ,उनके आने का मार्ग देखते–देखते आँखों में धुँधलापन छाने लगा है, अर्थात् दृष्टि एकदम मन्द पड गयी है। मेरी जीभ पर भी राम को पुकारते–पुकारते छाले पड गये है। अर्थात् विरह–दशा दयनीय हो गयी है, किन्तु अभी तक प्रियतम परमात्मा से मिलन नहीं हो पाया है।

विशेष–(1) नेत्रों में झांई पडना तथा जीभ पर छाले पडना– ये दोनों स्थितियां विरहानुभूति की तीव्रता की व्यंजक है।

(2) प्रेमाभक्ति का स्वर मार्मिक है।

(5) पाँणी ही तैं हिम भया, हिम है गया बिलाइ।
जौ कुछ था सोई भया, अब कछू कह्या न जाइ।।

हिम –बर्फ । बिलाइ–विलीन। सोइ– वही, मूल रूप।

प्रसंग– यह दोहा संत कवि कबीर दास द्वारा रचित सांखियो से उद्वत है। इसमें आत्मा–परमात्मा की अद्वैतता का सुन्दर प्रतिपादन किया गया है।

व्याख्या– कबीर दास कहते है कि पानी से ही बर्फ बनता है और बर्फ पिघल कर फिर पानी के रूप में विलीन हो जाती है। इस प्रकार जो तत्व अर्थात् पानी पहले था, वहीं बर्फ बनने के बाद फिर उसी मूल रूप में विलीन हो गया है। इस सृष्टि में अलग तत्व कुछ नहीं कहा जा सकता है।

आशय यह है कि परमात्मा से ही जीवात्मा की उत्पत्ति होती है इस उत्पत्ति में माया का सहयोग बना रहता है। अतः विशुद्ध चैतन्य जीव माया के कारण बद्ध जीव हो जाता है। जीव जब माया से मुक्ति का प्रयास करता है तो आत्मबोध के कारण वह परमात्मा को अर्थात् अपनी विशुद्ध पूर्व स्थिति को प्राप्त हो जाता है। इस तरह परमात्मा जीवात्मा में अद्वैतता के अलावा और कुछ नहीं है।

विशेष– (1) जीवात्मा एवं परमात्मा की अद्वैतता का सुन्दर निरूपण हुआ है। अद्वैतवाद कबीर का मुख्य सिद्वान्त माना जाता है। एक अन्य साखी में भी कबीर ने इसी तत्व का प्रतिपादन इस प्रकार किया है।

जल मैं कुंभ, कुंभ मैं जल हैं, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ, जल जलहिं समाना, यह तथ कह्यौ ग्यानी।।

(2) अन्योक्ति के द्वारा विषय– प्रतिपादन प्रशस्य है।

महेश कुमार बैरवा (व्याख्याता)